एकलव्य का प्रकाशन

ऋतुओं का स्कूल

बच्चों के लिए कविताएँ

ऋतुओं का स्कूल

एकलव्य
का प्रकाशन

ऋतुओं का स्कूल
चकमक में प्रकाशित कविताओं का संग्रह

© एकलव्य

प्रथम संस्करण : नवम्बर, 2001, 3000 प्रतियाँ

मूल्य : 15.00 रुपए

आवरण : धनंजय
पिछला आवरण : दुर्गा बाई

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
एवं सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित।

प्रकाशक : **एकलव्य**
ई-7/ एच. आई. जी. 453, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः 463380, फैक्सः 461703

I S B N 81-87171-38-3

मुद्रक : राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल

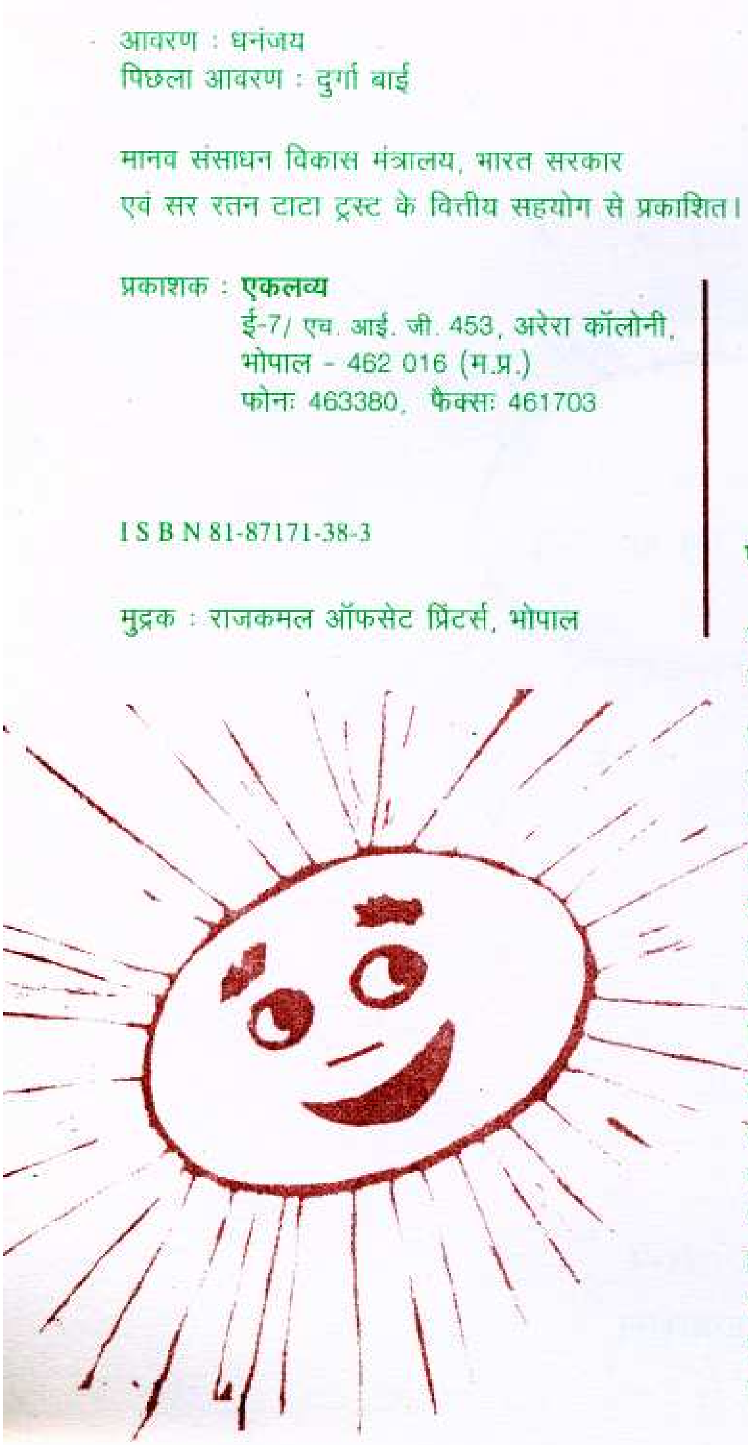

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो। जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। एकलव्य ने अपने काम के दौरान पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एकलव्य ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी फीचर) तथा *संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) एकलव्य के नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की है।

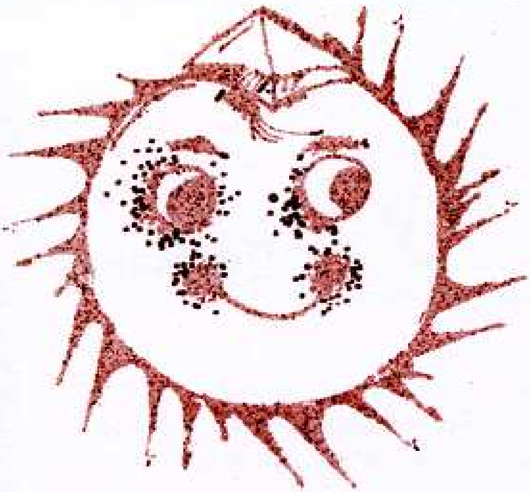

आपस की बात

'ऋतुओं का स्कूल' बच्चों के लिए बड़ों द्वारा लिखी गई कविताओं का संकलन है। ये कविताएँ एकलव्य द्वारा प्रकाशित मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका से ली गई हैं।

चकमक का प्रकाशन 1985 में शुरू हुआ था। पिछले पन्द्रह सालों में इस पत्रिका में विविध सामग्री प्रकाशित हुई है। इस सामग्री को सम्पादित कर छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में प्रस्तुत करने की एक वृहत योजना है। 'ऋतुओं का स्कूल' इसी क्रम में कविताओं का दूसरा संकलन है। पहला संकलन 'बाँकी-बाँकी धूप', 1998 में प्रकाशित हुआ था।

प्रस्तुत संकलन की अधिकांश कविताएँ मौसम पर हैं। हालाँकि मूल रूप से ऐसा संकलन निकालने की योजना नहीं थी। किन्तु चयन के बाद जो कविताएँ सामने आई, उनसे यह मौसम की कविताओं का ही संकलन बन गया है।

बच्चों के लिए लिखी जाने वाली कविताओं में अक्सर कुछेक शब्द, बिम्ब और प्रतीक ही बार-बार दोहराए जाते हैं। इस कारण से बहुत-सी कविताएँ भले ही वे अलग-अलग लोगों ने लिखी हों, एक-सी नज़र आती हैं।

चकमक में हर वर्ष, हर मौसम में उससे सम्बंधित एक या दो कविताएँ प्रकाशित होती रही हैं। इसलिए चुनते समय यह ख्याल रखा गया कि हर कविता अलग नज़र आए। इन कविताओं में मौसम को नए बिम्बों, प्रतीकों और दृश्यों के साथ चित्रित किया गया है।

चकमक में हर संभव यह कोशिश रही है कि कविता का चित्रण उसकी कल्पनाशीलता को और अधिक उभारे। प्रस्तुत संकलन में कुछ कविताओं के साथ वही चित्र हैं जो चकमक में प्रकाशित हुए थे। कुछ कविताओं के चित्र दुबारा बनवाए गए हैं।

इस संकलन में शामिल सभी रचनाकारों व चित्रकारों का एकलव्य और चकमक से आत्मीय लगाव रहा है। कविताओं तथा चित्रों को पुनः प्रकाशित करने के लिए हमें इनसे सहज और सहर्ष रूप से अनुमति मिली है। इसके लिए हम इन सभी के आभारी हैं।

श्रीमती सुधा चौहान, श्री रामवचन सिंह 'आनन्द' और श्री नवीन सागर अब हमारे बीच नहीं हैं। यह संकलन उनकी याद में समर्पित है।

● एकलव्य समूह

नवम्बर, 2001

इस संग्रह के रचनाकार

सुधा चौहान : (जन्म 1924- निधन 22 अप्रैल, 1996) आपने बड़ों तथा बच्चों के लिए समान रूप से लिखा। बच्चों के लिए कविताओं तथा कहानियों के संग्रह प्रकाशित। चकमक के आरम्भ से ही उसमें कहानियाँ तथा कविताएँ प्रकाशित।

रामवचन सिंह 'आनन्द' : (जन्म 25 दिसम्बर, 1932 - निधन 20 अप्रैल, 2000) आप उन रचनाकारों में थे जो अन्त तक चकमक से जुड़े रहे। आपकी रचनाओं का मुख्य आधार विज्ञान विषय रहा है। जीव-जन्तुओं पर आधारित पहेलियों का एक संग्रह 'बूझो-बूझो' एकलव्य से प्रकाशित हुआ है। कविता तथा कहानियों के अन्य कई संग्रह प्रकाशित।

नवीन सागर : (जन्म 29 नवम्बर, 1948 - निधन 14 अप्रैल, 2000) मुख्य रूप से बड़ों के लिए लिखी गई कविताओं तथा कहानियों के लिए जाने जाते रहे हैं। आपने चकमक के लिए खासतौर पर कविताएँ लिखीं। आपकी रचनाएँ नए बिम्ब और प्रतीकों के कारण अपनी अलग छाप छोड़ती हैं। बाल कविताओं का संग्रह 'आसमान भी दंग' शीर्षक से प्रकाशित।

डॉ. श्रीप्रसाद : लगभग पैंतालिस साल से बाल साहित्य की सभी विधाओं में नियमित रूप से लिख रहे हैं। अब तक चालीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित।

सम्पर्क : ब्रजभूमि, एन 9/87 डी 77, जानकीनगर, बजरडीहा, वाराणसी, उ.प्र. 221 109

राजनारायण चौधरी : पिछले चालीस साल से बच्चों के लिए कविता, कहानी तथा एकांकी लिख रहे हैं। तीन कविता संग्रह और एक कहानी संग्रह प्रकाशित।

सम्पर्क : प्रोफेसर कॉलोनी, हाजीपुर, बिहार 844 101

डॉ. राष्ट्रबंधु : बच्चों के लिए हर विधा में लिखते रहे हैं। कविताओं, कहानियों तथा नाटकों के संग्रह प्रकाशित। पिछले बीस वर्षों से मासिक 'बाल साहित्य समीक्षा' का सम्पादन एवं प्रकाशन कर रहे हैं।

सम्पर्क : 106/306, रामकृष्ण नगर, क़ानपुर, उ.प्र. 208 012

डॉ. हरीश निगम : बड़ों तथा बच्चों के लिए नियमित रूप से लिख रहे हैं। बच्चों के लिए लिखी अनेक कविताएँ, शिशुगीत, बालकथाएँ तथा नाटक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

सम्पर्क : बसेरा, प्रेम विहार कॉलोनी, प्रेमनगर, सतना, म.प्र.

महेश कटारे 'सुगम' : बड़ों और बच्चों के लिए नियमित रूप से कविताएँ तथा कहानियाँ लिख रहे हैं।

सम्पर्क : प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, कुरवाई विदिशा, म.प्र.

गिरिजा कुलश्रेष्ठ : मूलतः शिक्षिका हैं। बच्चों के लिए नियमित रूप से कविताएँ तथा कहानियाँ लिख रही हैं।

सम्पर्क : खारेकुआँ के पास, कोटावाला मोहल्ला, लोहामण्डी, ग्वालियर

जया नर्गिसः बड़ों तथा बच्चों के लिए समान रूप से लिख रही हैं। संगीत तथा नाटकों में खास रुचि।

सम्पर्क : एम.आई.जी.- 305, मुखर्जी कॉम्पलेक्स, स्टेशनरोड होशंगाबाद, म.प्र. 461 001

सुशील शुक्लः उभरते हुए युवा रचनाकार हैं। चकमक में कार्यरत।

सम्पर्क : एकलव्य, ई-7/453, एच.आई.जी., अरेरा कॉलोनी, भोपाल

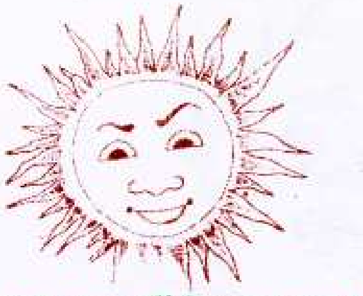

एवं चित्रकार

जया : मूलतः मूर्ति शिल्पकार। भारत भवन के अलावा कई कला दीर्घाओं के लिए संकलन का काम किया है। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भागीदारी। पंद्रह वर्षों तक चकमक में कला एवं सज्जा का कार्य। अब स्वतंत्र रूप से कला के क्षेत्र में सक्रिय।

सम्पर्क : जी-1/8 गुलमोहर कॉलोनी, ई-8, शाहपुरा, भोपाल, म.प्र.

धनंजय : मध्यप्रदेश के जानेमाने चित्रकार। व्यावसायिक कला के क्षेत्र में इन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई है। मध्यप्रदेश शासन के वन्या प्रकाशन से संबद्ध।

सम्पर्क : जे-281, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल, म.प्र. 462 003

कैरन हेडॉक : एकलव्य व अन्य शिक्षा संस्थाओं के साथ शिक्षा के क्षेत्र में काम का लम्बा अनुभव। विज्ञान की पढ़ाई में कला के महत्व पर स्कूली बच्चों और शिक्षकों के साथ काम कर रही हैं। चित्रांकन के साथ-साथ बच्चों के लिए लिखती भी हैं। चंडीगढ़ में रहती हैं।

सम्पर्क : टीचर्स फ्लैट नं. 40, सेक्टर-14, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़

शोभा घारे : आपके रेखांकन और चित्रों में प्रकृति की विभिन्न छवियाँ देखी जा सकती हैं। राष्ट्रीय ललितकला अकादमी पुरस्कार से सम्मानित। पशु व पक्षियों से गहरा लगाव। स्वतंत्र रूप से कार्य।

सम्पर्क : बी-106, शास्त्री नगर, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, भोपाल

आशा रोमन : विभिन्न कला दीर्घाओं के लिए कलाकृतियों का संकलन। मध्यप्रदेश माध्यम के ग्राफिक विभाग में कार्यरत।

सम्पर्क : 2, सिविल लाइन्स, किलोल पार्क के सामने, भोपाल

हिमांशु जोशी : भोपाल के भारत भवन से संबद्ध।

सम्पर्क : एफ-102, सुखशांति अपार्टमेंट, सेक्टर-बी, कोलार रोड, सर्वधर्म कॉलोनी, भोपाल, म.प्र. 462 016

मनोज कुलकर्णी : कला और सामाजिक मुद्दों से गहरा सरोकार। *तूलिका संवाद* संस्था से जुड़ाव। बैंक में कार्यरत।

सम्पर्क : ई-8/60, त्रिलंगा फ्लैट नं एफ-1, डी विंग साईंधन अपार्टमेंट, भोपाल, म. प्र. 462 039

रंजित शेठ बालमुचु : मूलतः आर्किटेक्ट। चित्रकारी और कम्प्यूटर एनीमेशन में गहरी अभिरुचि। स्वतंत्र रूप से काम करते हैं।

सम्पर्क : सी- 325, कोयल नगर, राउरकेला, ओड़ीसा 769 014

परसाद सिंह कुशराम : म.प्र. के डिंडोरी जिले के निवासी। बारहवीं तक की पढ़ाई के बाद परम्परागत गोंडी पेंटिग का काम। गत पाँच वर्षों से इन्दिरा गाँधी मानव संग्रहालय से संबद्ध।

सम्पर्क : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल, म.प्र. 462 013

दुर्गा बाई : म.प्र. के मंडला जिले की निवासी। गोंडी शैली की चित्रकार। स्वतंत्र रूप से काम करती हैं।

सम्पर्क : सी-164/1, प्रोफेसर्स कॉलोनी, भोपाल, म.प्र.

जादूगर यह कौन?

काली खुली जटाओं वाला
जादूगर यह कौन?

कहाँ-कहाँ से नभ में आता?
तरह-तरह के खेल दिखाता
पवन-पंख पर उड़ने वाला
जादूगर यह कौन?

ऐसे छू-मंतर पढ़ देता
सूरज को ओझल कर देता
दिन को रात बनाने वाला
जादूगर यह कौन?

धरती तक ऐसे झुक जाता
जैसे हाथी सूँड़ नवाता
सबका चित्त लुभाने वाला
जादूगर यह कौन?

जब-जब इसके दिल में आता,
झोले से बूँदें टपकाता
धरती को सरसाने वाला
जादूगर यह कौन?

● *राजनारायण चौधरी*

■ *चित्र : कैरन*

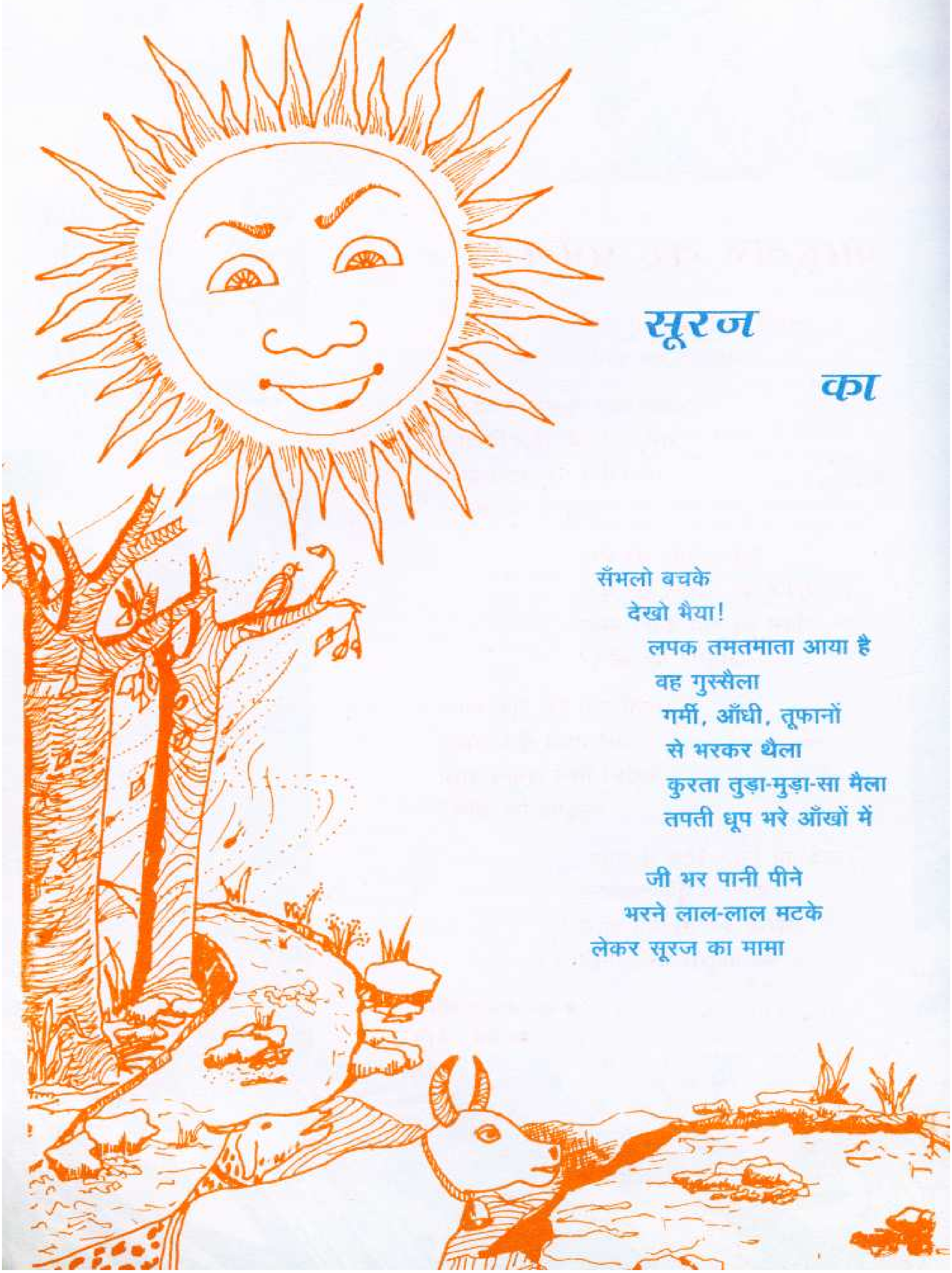

सूरज का

सँभलो बचके
देखो भैया!
लपक तमतमाता आया है
वह गुस्सैला
गर्मी, आँधी, तूफानों
से भरकर थैला
कुरता तुड़ा-मुड़ा-सा मैला
तपती धूप भरे आँखों में

जी भर पानी पीने
भरने लाल-लाल मटके
लेकर सूरज का मामा

मामा

जाने कौन दिशा से आ धमका है
नदी-पोखरों पर यों आ बमका है

मंद हवा की छीन तरावट
पानी...पानी... मची दुहाई
देखो इसकी लापरवाही
बेचैनी से छुटा पसीना
हारे पंखा भैया
बकरी, भेड़, रँभाती गैया
सूखे पनघट ताल तलैया
तड़प रही गौरैया

मैना हाँफे
दूर क्षितिज पर धरती काँपे
हरियाली तो कहीं रसातल नापे

सनन्... सनन... सन् लू के झोंके
उफ्... बे मौके... कोई रोके

धूल उड़ाता... ज्वाल उठाता
पेड़ गिराता, नमी चुराता
भूख मिटाता, प्यास बढ़ाता
रात छाँटता, नींद बाँटता
खुल-खुल खाँसे
सनकी बूढ़ा
करकट कूड़ा
आया आया बड़ा निगोड़ा
यह सूरज का मामा।

● *गिरिजा कुलश्रेष्ठ*
■ *चित्र : हिमांशु जोशी*

हरियाली का नेता

वह फिरता मुँह बाए
कौन उसे समझाए?

ऋतुओं में घुस जाता
आफत खूब मचाता,
लेकर काला छाता
छाती पर चढ़ जाता!

पकड़-पकड़ कर सबको
मनचाहा नहलाए
कौन उसे समझाए!

जब तपती है धरती
दे देता है गोता,
खलिहानों में जाकर
भूसा-नाज भिगोता!

आग्रह और निवेदन
असर नहीं कर पाए
कौन उसे समझाए!

कोयल के कानों में
जाने क्या कह देता?
मोरों को बौराता
हरियाली का नेता!

आशा की नौका पर
बिजली नहीं गिराए
कौन उसे समझाए?

ओले कभी गिराता
धर-धर रूप बिराता
खारा जल मीठा कर
फिर से वहीं सिराता

शैतानी अच्छी है
लेकिन बाढ़ न ढाए
कौन उसे समझाए!

● राष्ट्रबंधु
■ चित्र : जया

कितनी ठण्डक!

कितनी ठण्डक उफ री मइया!
नीचे गद्दा ऊपर हैं
दो-दो लिहाफ नानी के
जला गई फिर भी वह
सब टुकड़े छप्पर-छानी के।
बैठी जपती कृष्ण-कन्हैया!

सरयू काका दिन में सोचें
झाँक-झाँक अम्बर को
सूरज जी छुट्टी लेकर
भागे हैं शायद घर को।
खूँटे पर रँभाती गइया!

दिनों के गीले कपड़े
पड़े हुए हैं घर में
ओस-कुहासा-कुहरा है
भैया अपने तेवर में।
लगे काटती सबको छैंया!

कितनी ठण्डक उफ री मइया!

● राजनारायण चौधरी
■ चित्र : रंजित बालमुचु

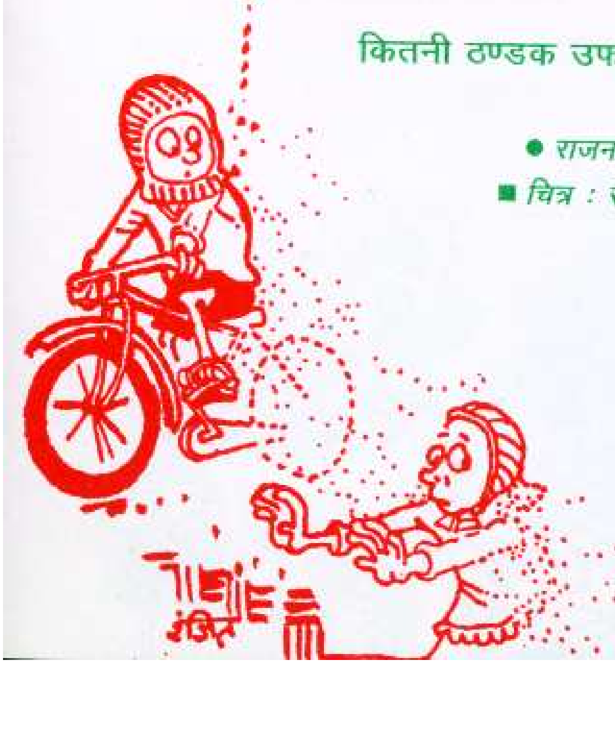

ऋतुओं का स्कूल

पोस्टमैन है सूरज चाचा
डाक सुबह की लाता है
द्वार-द्वार किरणों की पाती
ठीक समय पहुँचाता है।

चुन-चुन करती चिड़िया रानी
चुगती दाना, पीती पानी
गीत सुनाती प्यारे-प्यारे
जैसे हो आकाशवाणी
मौसम का हाल इसी से
हमें पता चल जाता है।

ऋतुओं का स्कूल खुला है
नहीं पढ़ाई यहाँ बला है
हल्का बहुत हवा का बस्ता
धूप-छाँव का पाठ चला है
क्लास छूटती जब रिमझिम की
घण्टा मेघ बजाता है।

शाम को खेला करते हम सब
रंग-बिरंगे फूलों से
सुंदर-सुंदर तितली के संग
इन्द्रधनुष के झूलों से
हिल-मिलकर यूँ हँसते-गाते
सारा दिन कट जाता है।

रात में जब अँधियारा छाया
हर-आहट ने हमें डराया
चौकीदारी मुस्तैदी से
चंदा मामा करने आया
निंदिया वाले बैंक में अपने
सपनों का इक खाता है।

● *जया नर्गिस*

■ *चित्र : धनंजय*

किरनों के संग खेलें

चलो चलें खेलेंगे
जो भी मिला राह में अपनी
साथ उसे ले लेंगे !

क्या खेलेंगे?
हमें क्या पता
जो सूझा खेलेंगे !

सूरज हुआ अगर ऊपर
पेड़ों में छुपकर के
उसे चुनौती देंगे छू लो
किरनें दौड़ाकर के

किरनें जैसे ही छूने को
आसमान से उतरें
गिलहरियाँ दौड़ें -
पेड़ों पर
आती किरनें कुतरें

भाग खड़ी होंगी ऊपर को
आएँगी फिर नीचे
गिलहरियों से बच
पत्तों से छन के नीचे-नीचे

घुस जाएँगे तुरत
पेड़ की कोटर में हम सारे
धीरे-धीरे बुझ जाएँगे
सूरज के अंगारे

चली जाएँगी किरनें
हँसती हुई खीझ के मारे

चाँद खिलेगा छिटक जाएँगे
तारे तारे तारे
सो जाएँगे हम घर जाकर
खिड़की पास उघारे

हम समझेंगे खेल खतम है
लेकिन किरनें आकर
सुबह हमें छू लेंगी

सूरज
हमें दिखेगा हँसता ऊपर
ताली बजा-बजाकर !

● *नवीन सागर*

■ *चित्रः आशा रोमन*

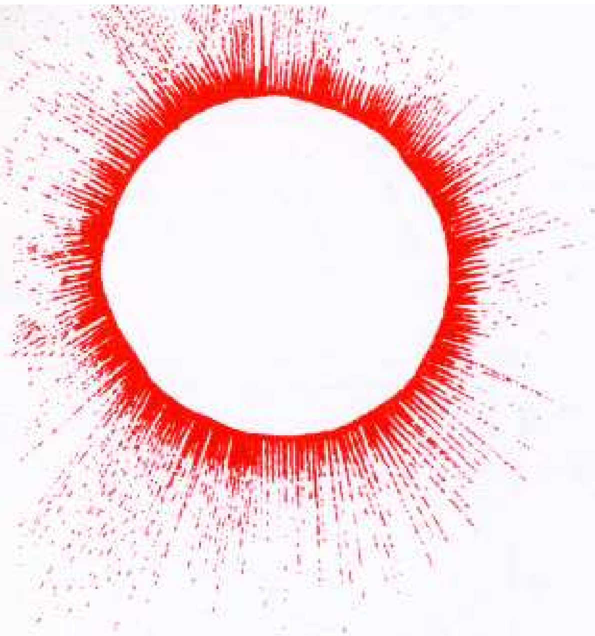

दिन गर्मी के आए

ज़मींदार-सी गर्मी आई
पेड़-पेड़ से हुई उगाही
पाई-पाई जुड़ी कमाई
शाख-शाख से जाए
दिन गर्मी के आए।

खेतों की सारी हरियाली
काट धूप ने भूस बना ली
गेहूँ, चना, राई के डंठल
सबको यही सुनाएँ
दिन गर्मी के आए।

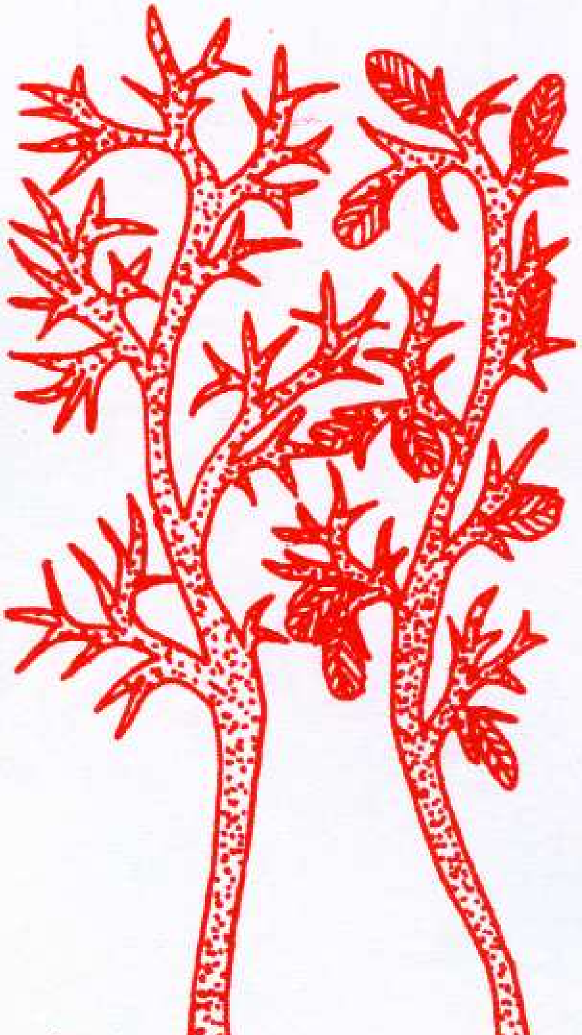

आई जब से गर्म दुपहरी
होने लगी छाँव की चोरी
सिर पर हाथ धरे बैठे हैं
किसको रपट लिखाएँ
दिन गर्मी के आए।

घाम ने खींचे कपड़े सारे
ताल-तलैया हुए उघारे
मोती, कबरी जीभ निकारे
दिन-दिन भर सुस्ताएँ
दिन गर्मी के आए।

उल्टी गिनती गिनें पहाड़
कब आओगे यार अषाढ़
बर्षा की पहली फुहार को
सबके मन ललचाएँ
दिन गर्मी के आए।

● *सुशील शुक्ल*
■ *चित्र : परसाद सिंह*

काँप रहे कक्का

सालाना दौरे पर
जाड़ा फिर आया,
एक चक्र घूम गया
ऋतुओं का चक्का!

मार रही गर्मी भी
छक्के पर चौके,
गेंद लगी ठण्ड की
छूट गया छक्का!

तैरेगी कैसे अब
मुन्ने की नैया,
नदिया का कलकल जल
आज हुआ थक्का!

ठण्डाई-लस्सी ने
कह दिया टा-टा,
चाय का, कॉफी का
रंग जमा पक्का!

सूरज की अँगीठी
जलती न भोर में,
तापे तो क्या
बूढ़ी-बेचारी अक्का!

दोहरी रजाई में
लिपटे हैं सिमटे,
फिर भी हैं थर-थर-थर
काँप रहे कक्का!

भेज दी चेतावनी
शीत की लहर ने,
झेलेंगे खाकर क्या
गेहूँ या मक्का!

● *रामवचन सिंह 'आनन्द'*

■ *चित्र : मनोज कुलकर्णी*

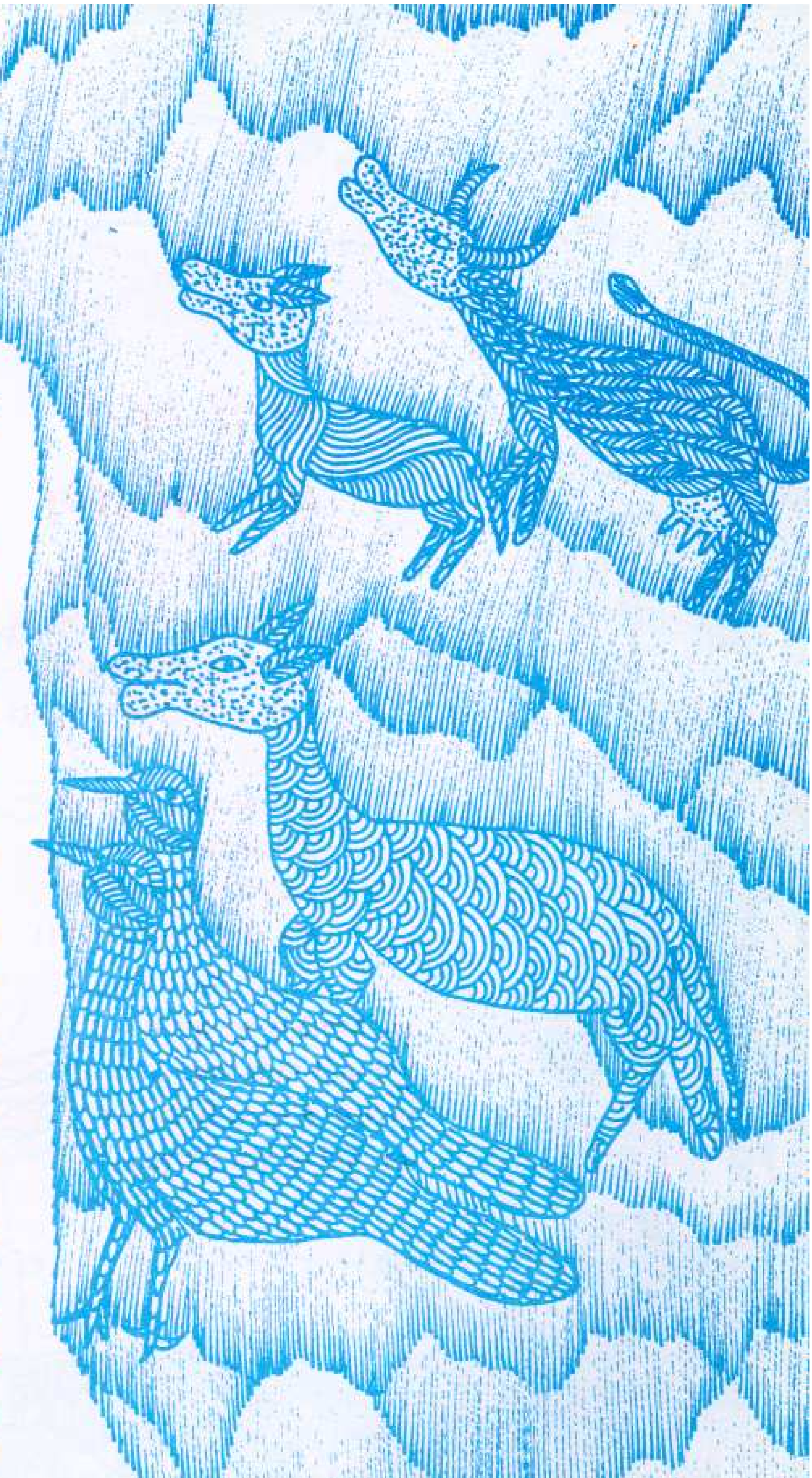

बादल आए

गोरे-गोरे, काले-काले,
बादल आए जादू वाले।

कुत्ता-गइया
हाथी-घोड़ा
और कभी
हंसों का जोड़ा
या फिर बनकर अरना भैंसे
दौड़ेंगे होकर मतवाले।

पल में आते
पल में जाते
कभी महीनों
नजर ना आते
और कभी जम जाते ऐसे
हफ्तों तक ना टलते टाले।

कभी गरजते
कभी बरसते
इन्द्रधनुष के
रंग परसते
और कभी ओले बरसा के
तोड़ गए हैं शीशे-प्याले।

● *हरीश निगम*

■ *चित्र : परसाद सिंह*

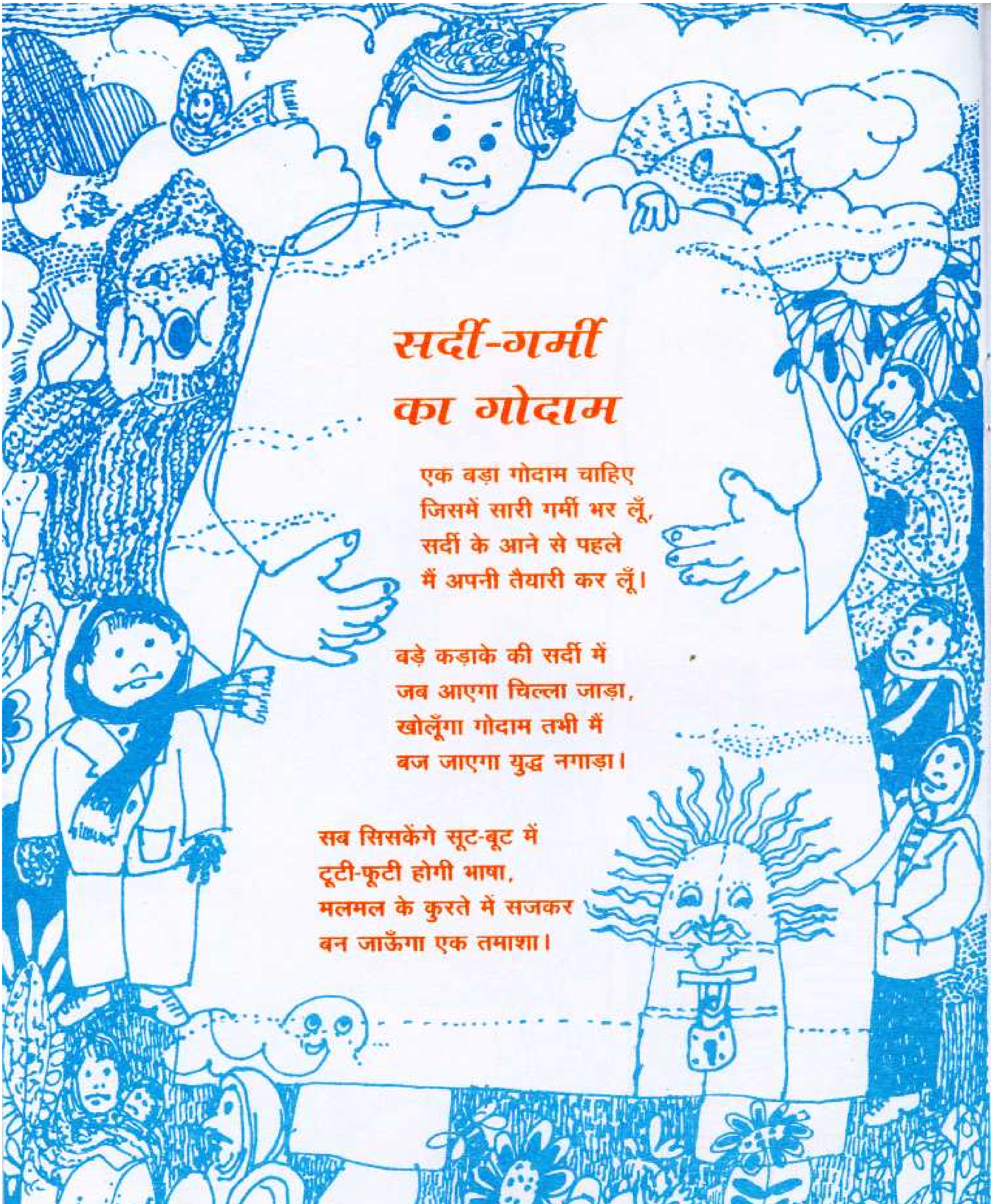

सर्दी-गर्मी का गोदाम

एक बड़ा गोदाम चाहिए
जिसमें सारी गर्मी भर लूँ,
सर्दी के आने से पहले
मैं अपनी तैयारी कर लूँ।

बड़े कड़ाके की सर्दी में
जब आएगा चिल्ला जाड़ा,
खोलूँगा गोदाम तभी मैं
बज जाएगा युद्ध नगाड़ा।

सब सिसकेंगे सूट-बूट में
टूटी-फूटी होगी भाषा,
मलमल के कुरते में सजकर
बन जाऊँगा एक तमाशा।

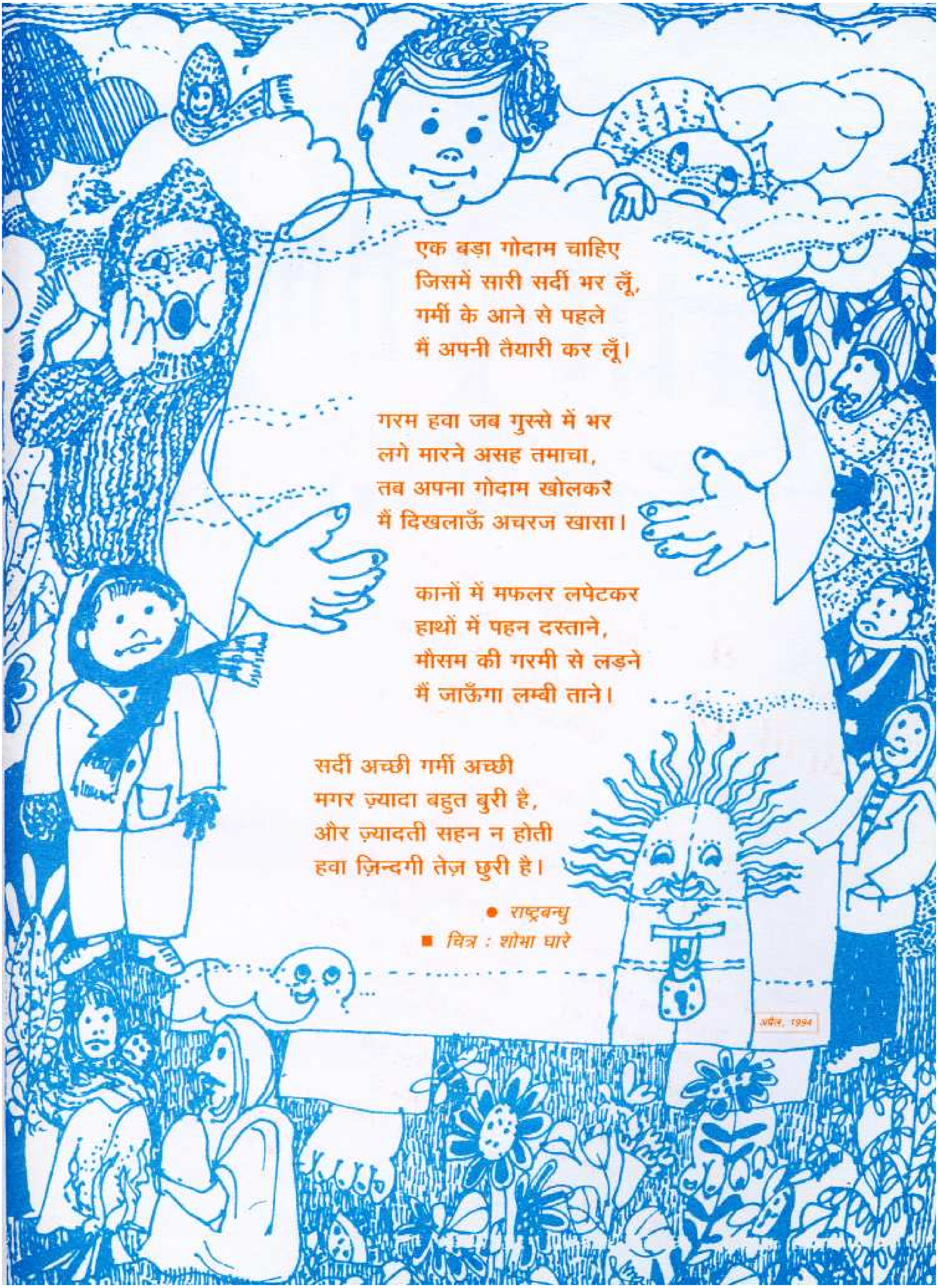

एक बड़ा गोदाम चाहिए
जिसमें सारी सर्दी भर लूँ,
गर्मी के आने से पहले
मैं अपनी तैयारी कर लूँ।

गरम हवा जब गुस्से में भर
लगे मारने असह तमाचा,
तब अपना गोदाम खोलकर
मैं दिखलाऊँ अचरज खासा।

कानों में मफलर लपेटकर
हाथों में पहन दस्ताने,
मौसम की गरमी से लड़ने
मैं जाऊँगा लम्बी ताने।

सर्दी अच्छी गर्मी अच्छी
मगर ज़्यादा बहुत बुरी है,
और ज़्यादती सहन न होती
हवा ज़िन्दगी तेज़ छुरी है।

● *राष्ट्रबन्धु*

■ *चित्र : शोभा घारे*

ये गर्मी की रात

चंदा की किरणों के रथ पर
शीतलता का आना
यहाँ-वहाँ हर तरफ चमकती
चाँदी का मुस्काना

भली भली-सी
लगती मुझको
ये गर्मी की रात

आसमान के
ऊपर निकले
तारों की बारात......

छत के ऊपर हल्का-फुल्का
करके रोज़ बिछौना
बड़ा मज़ा देता गर्मी भर
खुली हवा में सोना

तेज़ धूप के कारण दिन में
होना पड़ता कैद
बाहर निकलो, लू लगने को
खड़ी हुई मुस्तैद

फिर क्या कहना
अगर कहीं हो
दादी माँ का साथ.....

बहुत रात तक
जुड़े मंडली
चलती रहती बात....

● महेश कटारे 'सुगम'
■ चित्र : मनोज कुलकर्णी

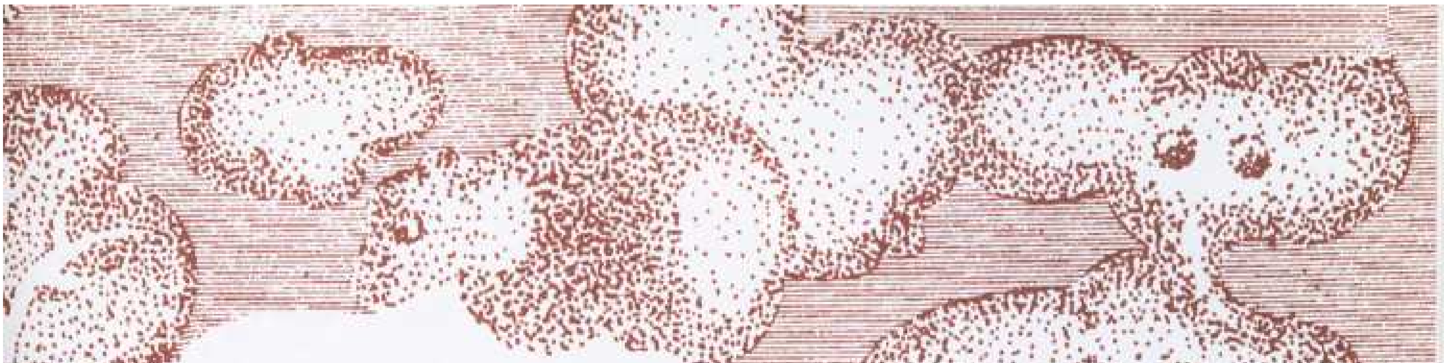

बादल

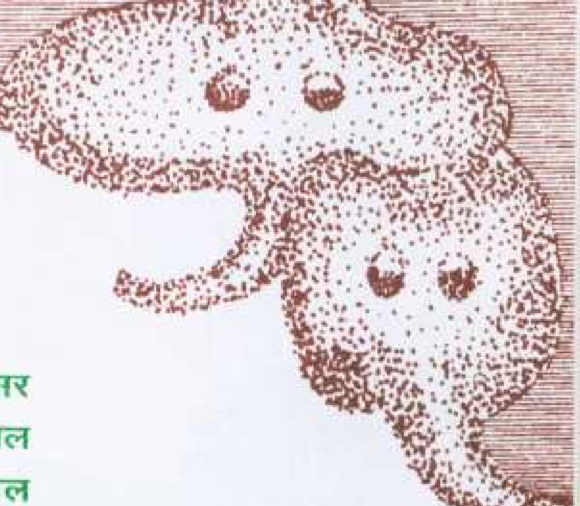

काले-काले, पानी वाले
आसमान में बादल आए
बोलो, कैसे आकर छाए

हवा पकड़कर, लाती सर-सर
छाए जैसे काले कम्बल
कितने सुन्दर लगते बादल

पेड़ों जैसे, भेड़ों जैसे
लगते जैसे चलते घोड़े
बन जाते हाथी के जोड़े

नन्हें जल-कण, गए भाप बन
उसी भाप ने ठण्डक पाई
बादल बरसे, बरसा आई

करते गड़गड़, आते बढ़-बढ़
बिजली बादल को चमकाए
अँधियारे में राह दिखाए

मोर मगन मन, छूम छननछन
झूम झूमकर नाच दिखाए
खुश हो होकर गाना गाए

बरसे बादल, कलकल छलछल
तैर चली कागज़ की नैया
पूँछ उठाकर भागी गैया।

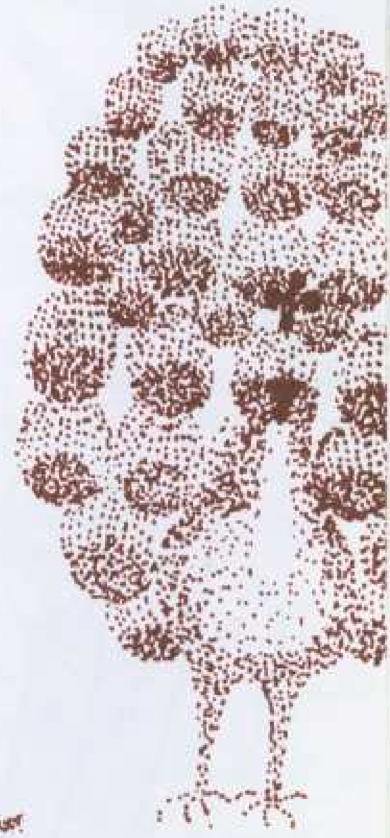

● *डॉ. श्रीप्रसाद*

■ *चित्र : जया*

आया बसंत

दिन को सूरज लगा चमकने
हवा लगी अब सरसर बहने
पत्ते पीले पड़े, पेड़ के
झड़ते, हवा संग हैं उड़ते
रितु बसंत का स्वागत करने
नई कोपलें सजीं पेड़ पर
सेमल खिलता लाल फूल से
टेसू फूला डाल-डाल पर
नई बौर छा गई आम पर
महुआ चूता सुबह टपककर

कोयल पंचम सुर में गाती
मीठा मंगल गान सुनाती
कूक-कूककर डाली-डाली
सबके कानों में कह जाती
रितु बसंत छाई मतवाली
कचनारों की छटा निराली
सरसों फूली पीली-पीली
बीच खिली है अलसी नीली
सरसों खेत बसंती रंग का
हवा चली पीला रंग लहरा

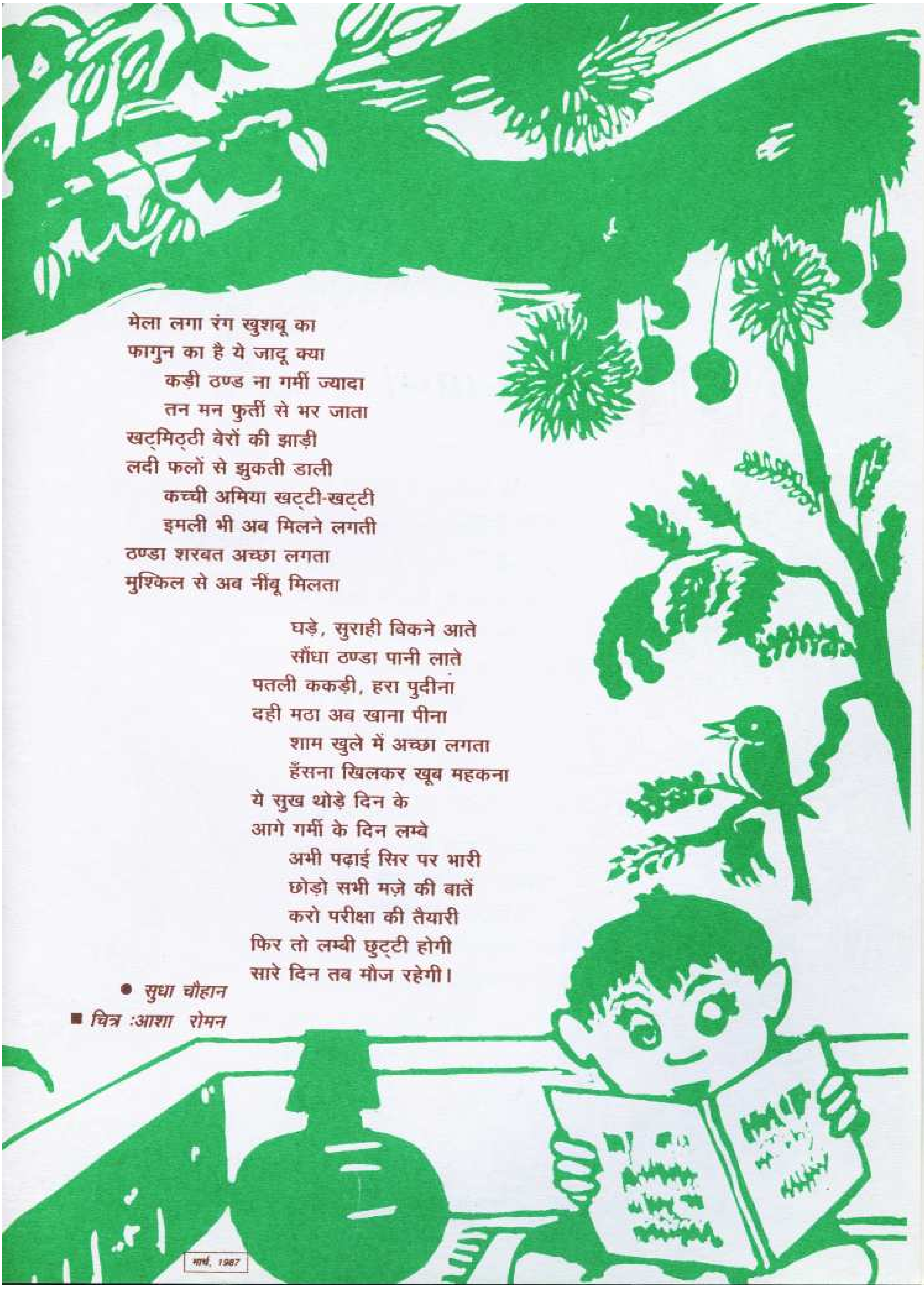

मेला लगा रंग खुशबू का
फागुन का है ये जादू क्या
कड़ी ठण्ड ना गर्मी ज्यादा
तन मन फुर्ती से भर जाता
खट्मिठ्ठी बेरों की झाड़ी
लदी फलों से झुकती डाली
कच्ची अमिया खट्टी-खट्टी
इमली भी अब मिलने लगती
ठण्डा शरबत अच्छा लगता
मुश्किल से अब नींबू मिलता

घड़े, सुराही बिकने आते
सौंधा ठण्डा पानी लाते
पतली ककड़ी, हरा पुदीना
दही मठा अब खाना पीना
शाम खुले में अच्छा लगता
हँसना खिलकर खूब महकना
ये सुख थोड़े दिन के
आगे गर्मी के दिन लम्बे
अभी पढ़ाई सिर पर भारी
छोड़ो सभी मज़े की बातें
करो परीक्षा की तैयारी
फिर तो लम्बी छुट्टी होगी
सारे दिन तब मौज रहेगी।

● *सुधा चौहान*

■ *चित्र :आशा रोमन*

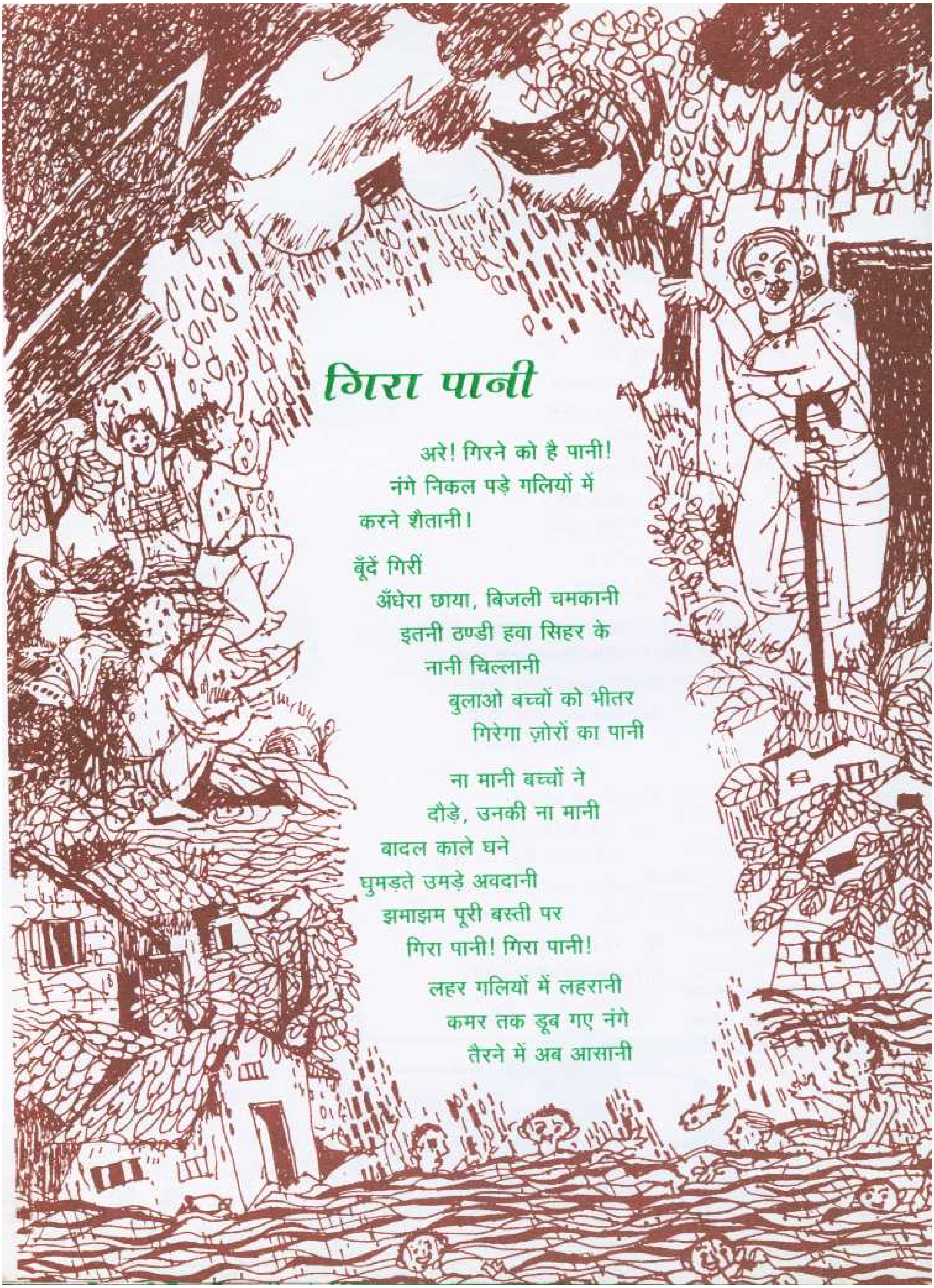

गिरा पानी

अरे! गिरने को है पानी!
नंगे निकल पड़े गलियों में
करने शैतानी।

बूँदें गिरीं
अँधेरा छाया, बिजली चमकानी
इतनी ठण्डी हवा सिहर के
नानी चिल्लानी
बुलाओ बच्चों को भीतर
गिरेगा ज़ोरों का पानी

ना मानी बच्चों ने
दौड़े, उनकी ना मानी
बादल काले घने
घुमड़ते उमड़े अवदानी
झमाझम पूरी बस्ती पर
गिरा पानी! गिरा पानी!
लहर गलियों में लहरानी
कमर तक डूब गए नंगे
तैरने में अब आसानी

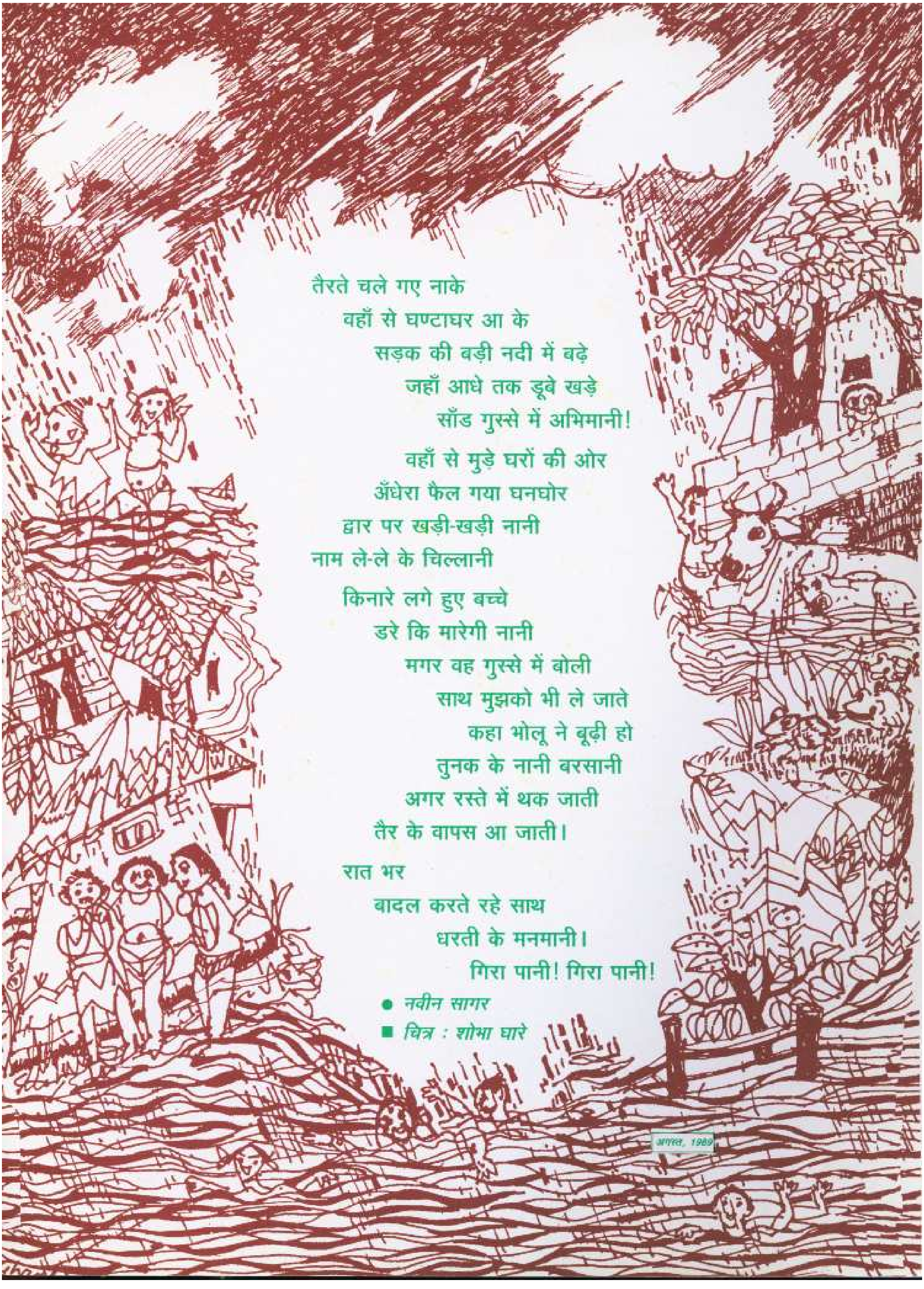

तैरते चले गए नाके
वहाँ से घण्टाघर आ के
सड़क की बड़ी नदी में बढ़े
जहाँ आधे तक डूबे खड़े
साँड गुस्से में अभिमानी!

वहाँ से मुड़े घरों की ओर
अँधेरा फैल गया घनघोर
द्वार पर खड़ी-खड़ी नानी
नाम ले-ले के चिल्लानी

किनारे लगे हुए बच्चे
डरे कि मारेगी नानी
मगर वह गुस्से में बोली
साथ मुझको भी ले जाते
कहा भोलू ने बूढ़ी हो
तुनक के नानी बरसानी
अगर रस्ते में थक जाती
तैर के वापस आ जाती।

रात भर
बादल करते रहे साथ
धरती के मनमानी।
गिरा पानी! गिरा पानी!

● *नवीन सागर*

■ *चित्र : शोभा घारे*

ISBN 81-87171-38-3

मूल्य : 15.00 रु.